BHAKTI MEANS ABSORPTION

आज का दिन बहुत ही शुभ है। "श्री श्री कुंजबिहारी दास बाबाजी महाराज", की तिरोभाव तिथि है। सन्तों के आविर्भाव व तिरोभाव पर वे अत्याधिक करुणामय होते हैं। वे करुणामय तो सामान्यतः भी रहते हैं। परन्तु, तिरोभाव पर..., क्योंकि कुछ सन्तों का..., ध्यान दीजिएगा, कुछ सन्तों का तिरोभाव और आविर्भाव भगवद् इच्छा से होता है। विशेषकर वे सन्त तो अत्याधिक करुणामय होते हैं, अपने आविर्भाव और तिरोभाव वाले दिन, और साथ में भगवान् भी। तो, जिन सन्तों का आविर्भाव व तिरोभाव भगवद् इच्छा से होता है, तो भगवद् इच्छा से जो चीज़ हो रही है, उस दिन भगवान् कितने खुश होंगे। कुछ सन्तों का होता है आविर्भाव और तिरोभाव इस प्रकार से।

आज बहुत ही परम पावन दिन है, "बाबाजी महाराज" का, हमारे गुरुदेव के गुरुदेव, उनकी तिरोभाव तिथि है, तो हम सबके लिए वैसे भी बहुत पावन दिन है।

तिरोभाव दिवस होता है या आविर्भाव दिवस होता है, तो उस दिन विशेष करुणामय होते हैं और जो आचार्यगण हैं, वे स्वप्न में भी दर्शन देते हैं, स्वप्न में भी आज्ञा देते हैं, या प्रत्यक्ष रूप से भी आज्ञा देते हैं, समाधि से निकलकर, आकर भी आज्ञा देते हैं..., यह भी होता है। **क्योंकि जब कार्य transcendental हो, तो distance is no bar, जब कार्य दिव्य हो, तो distance कुछ matter नहीं करता बिल्कुल।**

"परम गुरुजी", का जो mood था, वो पूरे विश्व में फैलाने का था, "मंजरी भाव"। आज के दिन हम ,"परम गुरुदेव" को सबसे अच्छी भेंट क्या दे सकते हैं...? **प्रचार तो तब होगा, जब हम खुद प्रचार ढंग से, हमें हुआ होगा।** जब हम खुद ही भक्त नहीं बन रहे, किसी को खाक भक्त बनाएँगे। तो, "परम गुरुदेव" की सबसे अच्छी सेवा क्या रहेगी आज के दिन? कि आज हम समझें, मैं nutshell में दस (१०) एक मिनट में कोशिश करुँगा summarize करने का सारी चीज़ को, कि हम समझ जाएँ कि..., क्योंकि हम जितने भी अपराध कर रहे हैं, जितनी भी negativity हमारे मन में है, जितनी भी fault finding है, वो केवल अज्ञान के कारण है। हमें अज्ञान है, इसलिए अपराध पर अपराध दिन-रात करते रहते हैं।

"Bhakti means absorption"

ध्यान दीजिए, एक-एक शब्द पर, Bhakti means absorption..., "absorption"- किसमें? परम गुरुदेव की पुस्तक है - "मंजरी स्वरुप निरुपण"। तो किस चीज़ में absorption? "मंजरी भाव" में absorption! ठीक है? Absorption रोज़..., पूरा जीवन।

अब, अपना मंजरी भाव जाग्रत करने की क्या विधि है? दो विधियाँ हैं..., दो प्रकार से। क्या हैं वे दो विधियाँ...? एक हैं भगवान्..., जीव गोस्वामिपाद ने बताया हुआ है अपने षड् संदर्भ में, कि दो प्रकार से सेवा करेंगे, तो हमारा स्वरूप जाग्रति सम्भव है। एक है 'सामान्य सेवा' और एक है 'वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा'। यह शब्द किसी को, ज़्यादातर जो neophytes आपस में discuss करते हैं, तो एक-दूसरे को और confuse करके, अपने जीवन destroy कर देते हैं। यह शब्द किसी को समझ ही नहीं आते हैं। सामान्य सेवा से हम समझते हैं, कि हमारी सोलह (१६) माला, Deity Worship हो गई, और पूरा दिन प्रजल्पा-निन्दा करा, हो गया हमारा सामान्य सेवा। यह नहीं है। यह किसने कहा यह है यह? Neophytes का मतलब है, new-new fight..., बस! हर समय..., neophyte मतलब, new-new अपना बुद्धि का प्रयोग और अपराध पर अपराध।

भक्ति का मतलब..., सबसे पहली बात है- 'absorption'..., absorption या तो अष्टकालीन लीला स्मरण में, गुटिका में, या वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा- "गुरु की सेवा"। गुरु की वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा दो प्रकार से होती है। एक तो गुरु के साथ physically रह कर उनके शरीर की, उनको पानी, नहाना-धोना, खाना खिलाना, सैर कराना, वो सब जो भी चीज़े हैं..., गाड़ी चलाना, वो सब सेवा होती है physically साथ रह कर।

दूसरी गुरु की सेवा होती है- वैशिष्ट्यलिप्सु, उनकी आज्ञा के अनुसार पूरा जीवन अपना अर्पण कर देना। Absorption होती है उसके अन्दर, बीच में प्रजल्पा नहीं चल रहा, निन्दा या negativity, fault finding नहीं चल रहा। सबसे पहले है सामान्य सेवा। सामान्य सेवा का यह मतलब नहीं है, कि वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा न करना। सामान्य सेवा का यह मतलब है, कि दिन रात श्रवण, अष्टकालीन लीला स्मरण, श्रवण, कीर्तन में, अध्ययन में absorbed रहना। तो जो हमारी foolish understanding है सामान्य सेवा की, कि सोलह माला कर ली, वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा नहीं की, तो वह सामान्य सेवा..., वह नहीं है। क्योंकि भक्ति का मतलब absorption है, एक बात।

भक्ति हम कम करें, वो समस्या नहीं है। परन्तु, निरपराध होकर भक्ति करें, निरपराध होकर। निरपराध कैसे होंगे? जब हमारा संग ठीक होगा। यह संग ठीक क्या चीज़ होती है? हम सोचते हैं भक्तों का संग..., *सर्व साधुसंग...*

"साधुसंग साधुसंग सर्व शास्त्र कहे।
लव मात्र साधु संग सर्व सिद्धि हय।।"

(श्री श्री चैतन्य चरितामृत मध्य लीला २४.५४)

यह क्या होता है साधुसंग? यह किस साधु की बात की जा रही है संग करने की? यह उन साधुओं की बात की जा रही है, उपदेशामृत में बताया गया है, जोकि गुरु की सेवा में निष्ठ हों और निन्दा से रहित हों, केवल उनका संग करना चाहिए। जो गुरु की सेवा में निष्ठ हों, सालों-सालों बीत चुके हों, दिख रहा हो, कि वे निष्ठ हैं और निन्दा से रहित हैं, negative बात न बोलें। केवल उनका संग करना है। जो अपराधी जीव हैं, ईर्ष्यालु जीव हैं, उनका संग, उनके दर्शन करने से भी हमारा भक्ति का ह्रास होगा..., जो अपराधी जीव हैं। वैष्णव तो वैष्णव हैं।

उपदेशामृत, रूप गोस्वामी के ग्रन्थ हैं ग्यारह (११) श्लोक हैं केवल उसमें, बताया गया है, जो वैष्णव हैं, जो हरिनाम लेते हैं, उनको प्रणाम करना है, यह नहीं बोला उनका संग करना है। प्रणाम बहुत दूर से भी कर सकते हैं। और संग करने के लिए उसी श्लोक की आखिरी लाइन में बताया जा रहा है - जो गुरु की श्रद्धा पूर्वक, अटूट श्रद्धा से सेवा कर रहे हों और negativity से रहित हों। क्यों? "Bhakti means absorption"! मन absorbed है बिल्कुल। या अष्टकालीन लीला स्मरण में या वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा में। इस बात को समझना पड़ेगा। Bhakti means absorption...

अगर हम कदर नहीं करेंगे association की, भगवान् हमारे को बाहर निकाल..., लात मार कर बाहर निकाल देंगे। हम तो क्या कुछ सोचने वाले, खींच के बाहर उठाकर बाहर फेंक देंगे..., अगर हम कदर नहीं करेंगे किसी चीज़ की। भगवान् tolerate नहीं करते हैं, 'God is a Person'..., भगवान् व्यक्ति हैं, उनकी अपनी likes और dislikes हैं। Either we mend our ways or we should know His ways..., He has His way. Please..., save, save yourself. Don't fall under māyā's trap. Don't do neophyte association. Associate with those, जो गुरु निष्ठ हों, निन्दा से रहित हों। Neophytes का संग मत करें।

जब हम अपराध करते हैं कई बार, तो ऐसे भी अपराध होते हैं, जिससे हमारा तो नाश होता ही होता है, हमारी पीढ़ियों का नाश हो जाता है। ऐसे भी अपराध..., जब महत् पुरुषों के प्रति अपराध होते हैं। अगर कोई वास्तव में महत् पुरुष है..., चाहे हम समझें, चाहे न समझें..., और यदि उस व्यक्ति के प्रति अपराध हो रहे हैं, हमारी पीढ़ियाँ नष्ट हो जाएँगी..., पीढ़ियाँ। चाहे कम करें, पर निरपराध भक्ति करें। मुँह को कम खोलें। 'राधाकुण्ड' आखिरी शब्द है उपदेशामृत का, पहला शब्द है 'वाचोवेगम्'। बटर-बटर-बटर-बटर बोलना नहीं है। हम दो (२) neophyte बैठे हैं, बस शुरु हो गए कोई भी विषय में बात करना।

संग हमेशा अपने से श्रेष्ठ व्यक्ति का करना चाहिए। और वह व्यक्ति श्रेष्ठ हमारी नज़र में कुछ भी हो सकता है, पर वह व्यक्ति ईर्ष्यालु नहीं होना चाहिए, यह बात याद रखनी चाहिए। निन्दा से रहित होना चाहिए। और जो इधर-उधर कमियाँ देख रहे हैं, हर भक्त के अन्दर, इसका मतलब है, अपनी भक्ति में absorbed नहीं हैं। भक्ति मतलब स्वयं की भक्ति में absorb होना, मैं कैसे उन्नत होऊँगा? मुझे अपने से मतलब है, मुझे दुनिया से मतलब नहीं है।

कई आचार्यगण बताते हैं, कि जैसे हम तो खुद ही छन्नी हैं। छन्नी में इतने सारे छेद हैं। तो छन्नी में छेद होंगे, वो किसी को देखेगा कि, "देखो इसमें छेद हैं", तो, बोलेंगे..., "खुद में क्या है?" हम तो छन्नी हैं, छेद ही छेद हैं। तो जो व्यक्ति अपनी भक्ति, अपने आप को improve करने में लगा हुआ है, वह किसी में fault ढूँढ नहीं सकता, समय नहीं है। क्योंकि हमारे पास ही इतने fault हैं, जीवन बीत जाएगा, fault पूरे overcome करने difficult हैं...। यह चीज़ clear है, यह चीज़? यह समझ आ रही हैं चीज़ें?

भक्ति का मतलब यह नहीं है, सामान्य सेवा मतलब कि कुछ भी, हम सोलह माला और वो सब हो गया और उसके बाद..., बातें करने से भक्ति नहीं होगी, भक्ति तो करने से ही होगी। बोलें..., बातें पर बातें दिन रात, बातें पर बातें करे जा रहे हैं और न वैशिष्ट्यलिप्सु में ध्यान है, न अष्टकालीन लीला स्मरण में ध्यान है।

जो वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा..., एक प्रकार है करने का, नहीं तो जिनको लगता है कि वह अच्छे रूप से सामान्य सेवा..., मतलब अष्टकालीन लीला में absorb रहना है। "बाबाजी महाराज" के Lectures हैं "भक्ति सन्दर्भ" पर और "राधारस सुधानिधि" पर, कार्तिक के हैं Lectures, काफ़ी सालों के हैं। जिसको चाहिए वे ले सकते हैं। उसमें absorb होइए और किसी चीज़ में absorb होइए इन दोनों में से, तीसरा तरीका नहीं है कोई भी।

और अगर कोई सेवा करना चाहता है, Deity Worship और अच्छे तरीके से, "गिरिराज जी" की, तो कोई भी कर सकता है "गिरिराज जी" की Deity Worship. जिसकी initiation हुई है..., यहाँ पर तो, राधाकुण्ड में जिनकी initiation नहीं हुई, वे भी करते हैं। जो भी करना चाहते हैं, कर सकते हैं। First day से कर सकते हैं। कोई problem नहीं है। जिसकी निजी इच्छा है, कि मैं "गिरिराज" की worship करना चाहता हूँ, they are most welcome! वे यहाँ से खुद "गिरिराज" को ढूँढ सकते हैं या किसी भक्त के साथ जाकर गिरिराज को बाबा के पास जाकर दिखा सकते हैं कि, "बाबा हमारे को दो-

तीन पसंद आ रहे हैं, हम किनकी करें..." शायद उनसे बाबा खुद choose करके दे दें, ऐसे होता है।

Deity सेवा तो करनी ही करनी है, सामान्य सेवा में भी, जब हम Deity सेवा कर रहे हैं, तो उसमें गुरु की भी वन्दन, अर्चन वगैरह सब होता है उसमें भी। तो वह सामान्य सेवा पर क्या होता है, कि Deity Worship में अगर हमें अति अनुराग है, तो वह भी कर सकते हैं। विशेष रूप से Deity Worship भी कर सकते हैं। जैसे मान लो गिरिराज जी की कोई करना चाहता है या कोई..., काफ़ी जैसे जिसको Deity Worship का शोक है, राधाकृष्ण के धातु के विग्रह भी ला सकते हैं या निताई-गौर के ला सकते हैं। गिरिराज ला सकते हो। तो और time waste न करें, जिसमें absorption हो, जहाँ से आप हृदय से feel करते हों। जैसे कुछ लोग राधाकृष्ण के विग्रह लेकर आते हैं। उनको लगता है की राधा और कृष्ण को ही सजाना है जी मंजरी बनकर, तो अभी से ही विग्रह होंगे, तो हम कर पाएँगे। यह भी गलत नहीं है। फिर प्राण प्रतिष्ठा करवानी चाहिए बाबाजी से। तो विशेष रूप से जो करना चाहते हैं, यह भी एक तरीका है, गिरिराज या धातु के विग्रह।

भक्ति के जब तक basics में हम strong नहीं होंगे, जैसे आज जो चीज़े मैं बता रहा हूँ, थोड़ी सी देर में, सब मैं basics बता रहा हूँ। जिसका base ही strong नहीं है, उसकी building कैसे खड़ी होगी? यही basics..., अगर आप देखोगे न जैसे..., आपको भौतिक example देना पड़ेगा, जैसे वो क्रिकेट टीम होती है, वह जो fast bowler है, वे सदियों से international वे खेलते हैं, उसके बावजूद भी उनका coach होता है। सोचो। किस लिए? वे बार-बार याद दिलाते हैं - basics मत भूलना, basics को मत भूलना। Basics भूल जाते हैं, तभी सारी problem आती हैं।

और एक और बात, हमारी बातें करने की आदत होती है और बातें करने में प्रश्न करने की आदत है और प्रश्न में हम एक बात भूल जाते हैं, भगवद् गीता ४.३४..., anyone remembers the संस्कृत श्लोक?

"तद्विद्धि प्रणिपातेन परिप्रश्नेन सेवया।
उपदेक्ष्यन्ति ते ज्ञानं ज्ञानिनस्तत्वदर्शिनः।।"

(गीता-४.३४)

'तद्विद्धि प्रणिपातेन'- यह विधि है। पहली बात..., क्या है प्रश्न करने में? यह विधि है, *'तद्विद्धि'*, क्या? *'प्रणिपातेन'*- surrender हो कर, *'परिप्रश्नेन सेवया'*। सेवा करेंगे, शरणागति होगी तब..., अगर हम वास्तव में उत्तर चाहते हैं, जिससे हमारा हृदय निर्मल

हो, soft हो, humble हों, तो हमारे को किसी सन्त की वैसी सेवा करें, फिर प्रश्न करें, तो वे उत्तर देंगे जिससे हमारा हृदय निर्मल होगा, हमारे..., वास्तव में हृदय से मैल जाएगी।

साधु या गुरुजन कोई answering machine नहीं हैं, कि हमने प्रश्न डाला और उत्तर आ गया और हमारा clear हो जाएगा। ऐसा नहीं होता। Guru-Sādhu is not an answering machine! वे बाध्य नहीं हैं हमारे किसी उत्तर देने के लिए, कि उनको उत्तर देना पड़ेगा, हमारी हर नासमझी का। नहीं। अगर करुणावश उत्तर आएगा, तो हमारा लाभ होगा। Answering machine नहीं होते साधुजन या गुरुजन। यह श्लोक क्यों बोला जा रहा है? *'सेव्या, प्रणिपातेन'।* क्योंकि हम ये basic चीज़ों का ख्याल नहीं रखते, तो अपराध होते हैं। अपराध का मूल कारण है, अज्ञान। अज्ञान है, नहीं मालूम कैसे करनी हैं चीज़ें।

गुरु के वाक्यों में पूर्ण निष्ठा होनी चाहिए। ऐसे अपराध करने से कुछ नहीं होगा। अपनी बुद्धि का प्रयोग करेंगे, विनाश हो जाएगा। असत्संग करेंगे, neophyte का संग आपस में, एक ही मतलब है, असत्संग। Neophyte का संग मतलब असत्संग ही होगा। कुछ सत्विचार तो हैं नहीं। Neophyte का मतलब क्या है? विषय-वासनाओं का समुद्र, साम्राज्य है हृदय के अन्दर। साम्राज्य समझते हो? "Kingdom"... विषय-वासनाओं का kingdom हृदय में है और एक-दूसरे को संग दे रहे हैं। संग नहीं दे रहे, अपने confusion डाले जा रहे हैं उसके सिर पर..., लो मेरी confusion तुम लो, तुम्हारी confusion मैं लेता हूँ। महत् संग बोला गया है हमेशा शास्त्रों में, किनका संग करना है।

गीता के अठारहवें अध्याय में -

"मच्चित्तः सर्वदुर्गाणि मत्प्रसादात्तरिष्यसि
अथ चेत्वमहङ्कारान्न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि"

(गीता-१८.५८)

इसका मतलब है, भगवान् कहते हैं कि, "यदि तुम मेरी बात मानोगे, यदि, अगर तुम मेरी बात मानोगे, तो मेरी कृपा से तुम्हारे सारे problem, सारे अवगुण, सारी समस्याएँ दूर हो जाएँगी। *अथः*, लेकिन, *"अथ चेत्वमहङ्कारान्न"*, अहंकारवश यदि तुम मेरी बात नहीं मानोगे, *"न श्रोष्यसि"*, नहीं सुनोगे मेरी बात, *"न श्रोष्यसि, विनङ्क्ष्यसि"*, तुम्हारा विनाश हो जाएगा, सर्वनाश हो जाएगा तुम्हारा। तुम्हारा क्या, तुम्हारी पीढ़ियों का सर्वनाश हो जाएगा।" भगवान् की कौन सी बातें माननी हैं? कौन सी बातें मानने के लिए बोला है भगवान् ने मेरी? कौन सी? सारी। सारी बातें कहाँ-कहाँ पर बताई गई हैं?

शास्त्र में। तो शास्त्र में जो निपुण व्यक्ति है, जिसने सालों-सालों अध्ययन किया है, उस व्यक्ति, जिसको वास्तविक ज्ञान है, अगर उस व्यक्ति से हमें शास्त्रिक knowledge मिलेगी, तो हम भगवान् की बात मानने का कोई scope है, otherwise तो scope ही नहीं है। हम किसी की बात मान रहे हैं, न उसने भागवत् पढ़ी, न C.C. पढ़ी, न कोई ग्रन्थ पढ़ा, हम उसकी बात मान रहे हैं, तो क्या होगा? *"न श्रोष्यसि विनङ्क्ष्यसि"*, होगा *"जन्म सत्यानाश करि, कर सत्यानाश"*। वह अपना जीवन भी व्यक्ति सत्यानाश कर रहा है, तुम्हारा जीवन भी सत्यानाश करेगा। जबकि होना क्या चाहिए?

"भारत-भूमिते हइला मनुष्य जन्म यार
जन्म सार्थक करि कर परोपकार"
(श्री श्री चैतन्य चरितामृत आदि लीला ९.४१)

अपना जन्म सार्थक करें और परोपकार करें।

और बात, सब ग्रन्थों में यही निचोड़ दिया जाता है कि हम..., अकेले हमारे जो इतने अनर्थ हैं, वे अकेले हम पार नहीं पा सकते हैं। कैसे पार पाए जाएँगे वो सारे अनर्थ? गुरु-वैष्णवों की कृपा से। कृपा तो तब होगी, जब हम उसके लिए चेष्टा करेंगे। जब हमने चेष्टा ही कभी नहीं की, तो कृपा कहाँ से होगी हमारे पर?

हम अपने हृदय से, अकेले बैठें, २ घण्टे, अकेले बैठें, घर पर बैठें, कहीं पार्क में बैठें, सोचें, "मैं कौन से भक्तों की कृपा पाने का प्रयास कर रही हूँ या कर रहा हूँ।" पहले भक्तों को identify तो करें, मुझे इनकी कृपा चाहिए। हवा में थोड़ा ही न कृपा हो जाती है कभी भी। कृपा तब होगी न, जब हमारी चेष्टा होगी। Business या factory तो तब खुलेगी न, जब हमने उसके लिए endeavour किया होगा। ऐसा नहीं कि हम सोचें, कि एक दिन मैं बहुत अमीर हो जाऊँगा। अरे! सोचने से हो जाओगे? बातें करने में कुछ रखा है क्या? Identify करें, "हाँ, मैं इनका कृपा पाना चाहती हूँ, मैं इनका कृपा पाना चाहता हूँ।" फिर उसके लिए endeavour करना पड़ेगा, प्रयत्न करना पड़ेगा। फिर उसके बाद यदि वह व्यक्ति प्रसन्न होंगे, तो कृपा करेंगे। तो पहले हम identify तो कर लें, मेरे top priority list में कौन हैं? फिर उसके लिए कार्यान्वित हों, endeavour करें। फिर कृपा होगी तो हमारे अनर्थ, हमारे अनर्थों का नाश होगा।

आज का दिन जो है, जैसे खासकर एकादशी और द्वादशी, यह दिन होते हैं नया resolutions लेने के, कि आज से मैं यह काम नहीं करुँगी या मैं आज से यह काम करुँगा। सबसे शक्तिशाली दिन दो माने जाते हैं- एकादशी, द्वादशी, नए resolutions

लेने के लिए, कि हाँ, यह मैंने काम करना ही करना है, यह काम मैंने नहीं करना। अपने जीवन को मोड़ दें, सही दिशा में।

अब मंजरी स्वरूप निरूपण, मंजरी। "मंजरी"! कितनी बार यह शब्द सुनते हैं, बोलते हैं - "मंजरी"। इसका, मंजरी का वास्तविक nature क्या होता है? वास्तविक nature? "मंजरी"। वे किससे बनी हुई होती हैं?

भक्त : सेवा रस से।

हाँ, वो सब तो ठीक है, सेवा रस से। वह तो हम सब जानते हैं, पर वास्तव में किससे बनी हुई होती हैं? **मंजरी मतलब, "Care की मूर्ति"।** Care, care! Manjari means care! राधारानी की वे care करती हैं, असीम मात्रा में और राधारानी मंजरी की असीम मात्रा में care करती हैं। "असीम मात्रा में care"। हर बात में care! वह कहीं खड़ी हैं, तो उनको चुभ रहा होगा, वो बैठी हैं अब तो इनको प्यास लग रहा होगा। इनको ऐसे श्रृंगार कर दूँ, ऐसी वेश रचना कर दूँ, यहाँ से अल्कावलि हो, यहाँ से puffs हो, इस-इस प्रकार के गहने हों, यहाँ पर बाज़ूबन्द हो। हर प्रकार की care! जो हम imagine भी नहीं कर सकते, वो care! "मंजरी means care..."।

मंजरी जैसे राधारानी की care करती हैं, वैसे राधारानी मंजरी की भी care करती हैं। दोनों प्राण एक हैं। तो यह nature हमारे अन्दर आना होगा इसी जीवन में मरने से पहले, कि हम भी एकदम caring हो जाएँ। एकदम, छोटी-छोटी बात पर care करें। और

"ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते।
संगात्सञ्जायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते।।"

(गीता-२.६२)

जैसा संग होगा, वैसा रंग हो जाएगा। परन्तु, जो मुझे लगता है, care, caring nature होने का, हम उस वातावरण में हों, जहाँ पर एक-दूसरे की बहुत care की जाती है, तो हमें पता चलेगा कि care होती क्या है वास्तव..., हमें तो पता ही नहीं चलेगा अन्त तक, यह care क्या होता है?

वह भक्त जो..., वह सन्त जो एकदम care की..., हर चीज़ की minutest aspect पर देखकर, हर प्रकार की care करते हों। हमने कभी किसी की care की है? निजी रूप में? तो हम care कैसे समझेंगे? तो जो वास्तव में care करते हैं, उनके आचरण से, उनके जीवन से देख सकते हैं, कि हाँ ऐसे किया जा..., ऐसे focus हुआ जाता है care पर

किसी की। यह प्रेम का सम्बन्ध है, प्रेम हमने अभी यहाँ नहीं किया, तो कैसे कर पाएँगे?

रामानुजाचार्य की एक कथा मुझे याद आ रही है, उनके पास एक भक्त आया और वह बोला कि, "महाराज, मैं आपसे दीक्षा लेना..., मुझे दीक्षा दीजिए", युवक था। बाबाजी ने..., रामानुजाचार्य ने बोला कि, "तुमने कभी किसी से प्रेम किया है?" वह बोला, "नहीं..." "तुम्हारा कुछ नहीं हो सकता"। दीक्षा ले कर क्या करोगे? भगवद् प्रेम ही तो प्राप्त करना है। प्रेम का कुछ एक nature तो पता हो। एक basic nature तो पता हो। और हमें प्रेम भी नहीं चाहिए, हम मंजरी बनना चाहते हैं। दास में भी प्रेम होता है..., जो वैकुण्ठ के दास हैं, उनमें प्रेम प्रचुर मात्रा में होता है। मंजरी मतलब "care की मूर्ति"। Care Care Care ! उनको इस समय यह चाहिए, उनको यह खाना है, यह बनाना है, हर समय meditating..., कैसे सेवा...? Care Care Care Care Care! और वैसे वातावरण में होंगे..., जो सन्तजन, जो एकदम caring हैं, तो यह हमारे अन्दर संक्रमित हो सकती है, *"संगात्सञ्जायते कामः"*, *"Caring संजायते Caring"*, इसको ऐसे समझ लें हम लोग। कैसे हमारे अन्दर में वह चीज़ आएगा? I was really touched with this point, "Manjari means, राधारानी की हर समय Care Care Care!" सुबह उठते ही, "मैं late तो नहीं हो गई?" अरे! सोई ही नहीं है। late कहीं..., थोड़ा सा ही तो अभी rest किया है..., मैं late तो नहीं हो गई?

सारी कथा सुनकर फिर से याद दिलाना चाहूँगा, "Bhakti means absorption, either in अष्टकालीन लीला स्मरण or वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा।" तीसरी बात नहीं है कोई भी। इस बात को बैठाना पड़ेगा अन्दर। अपने आप से पूछें, 'किसमें absorbed हैं?', दोनों में से किसी में नहीं..., तो फिर भक्ति के जैसा कुछ होगा। Duplicate copy!

दिन-रात, सोते-जागते, बस यही चलते रहना चाहिए। जिसमें absorbed हैं, अष्टकालीन लीला में वही चलना चाहिए। आधी रात को नींद खुलेगी ही सही बाबा, अगर अष्टकालीन लीला में absorbed हैं। नहीं तो वैशिष्ट्यलिप्सु में हो, उसके लिए नींद खुलेगी। आपकी किसी चीज़ में absorption हो, नींद कैसे आएगी पूरा दिन? रात को, एक साथ की नींद आएगी किसी को छः-आठ (६-८) घंटे की? जो absorbed हो भक्ति में..., वैशिष्ट्यलिप्सु या अष्टकालीन लीला स्मरण में? वैशिष्ट्यलिप्सु सेवा में स्मरणांग भक्ति, अष्टकालीन लीला स्मरण करना होता है, पर वह primary नहीं होता, secondary होता है। Primary होता है गुरु की विशेष सेवा करना।

"विशेषतः सेवां कुर्य्यात्"

(भक्ति सन्दर्भ)

"विशेषतः सेवां कुर्य्यात्", जीव गोस्वामी। और सामान्य सेवा में क्या होता है? कि श्रवण, कीर्तन, अष्टकालीन लीला स्मरण ही मुख्यांग रह जाता है। वही मुख्य है, वही सब कुछ है। पूरा absorb, सुबह, दोपहर, शाम और रात, चारों समय।

आज से हम अपने जीवन को नई दिशा दें। absorb! ठीक है।

एक और मैंने टीका सुनी थी किसी की - जी धाम में रहने से भक्ति हो जाती है सिर्फ़। ग्रन्थ पढ़िए- प्रेमभक्तिचन्द्रिका, उसमें बताया कि धाम में प्रीतिपूर्वक रहना होता है और निरपराध होकर रहना होता है। प्रेमभक्तिचन्द्रिका में बाबा बता रहे हैं, तो जाकर होता है लाभ, नहीं तो उसकी जगह अपराध हो जाते हैं, धाम के प्रति और प्रेम प्राप्त होने में बहुत दूरी, सूदूर हो जाता है प्रेम, यह शब्द बाबा लिख रहे हैं। सूदूर, बहुत दूर हो जाता है। धाम में रहना हो, तो भी प्रीतिपूर्वक और निरपराध होकर होगा। ऐसे नहीं कि रहकर कुछ भी करो रहकर, तो और अपराध हो जाएँगे। मैंने कितने लोग को आते और जाते हुए देखा है..., क्यों? धाम में रहकर अपराध हो रहे हैं। तो धाम में रहकर हो रहे हैं सोचिए। Gains भी thousand times हैं, losses भी thousand times हैं। फिर इसलिए बाहर जाना भी हो जाता है।

५:३५..., छत पर राधारानी चन्द्रशाला पर हैं इस समय, आने वाली हैं। इन्तज़ार कर रहे हैं, कब कृष्ण सखाओं के साथ यहाँ से जाएँगे। राधारानी almost बेहोश हो रही होती हैं इस समय। प्राण रहेंगे ही नहीं शरीर में। और ललिता कह रही हैं, "नहीं-नहीं बस आने ही वाले हैं, बस अभी आए, वह देखो गोधूलि आ रही है, तो वे कृष्ण आने ही वाले हैं।" फिर चन्द्रशाला के ऊपर ले कर जाते हैं। राधारानी को लाल साड़ी पहनाई जाती है शाम के वक्त, ताकि बिल्कुल अलग सी दिखें, कृष्ण को मेहनत न करनी पड़े देखने में, एकदम से देखें, ओह लाल साड़ी!

५:३५..., इसी, इसी समय के आसपास है, यही समय है। तो हमें घड़ी देखते ही ऐसे ही हर चीज़ ऐसे एकदम तुरन्त होना चाहिए। ५:३५..., अच्छा, पौने छः (५:४५) क्या होगा? ऐसे। अच्छा पाँच पचपन (५:५५) पर? ऐसे। और लगभग पौने छः के आसपास राधाकृष्ण का गुप्त मिलन भी होता है, विलास करते हैं पुनः, पौने छः के आसपास।

आपने वह जो छवि देखी है न, कई भक्तों के घर में, कि कृष्ण कुछ सखाओं के साथ एक तरफ़ जा रहे हैं और बलराम जी गायों के साथ एक तरफ़, वह इस समय का है,

५:३० के करीब का समय है। बलराम जी अलग जा रहे हैं गायों के साथ, कृष्ण अलग मुड़ रहे हैं। फिर आएँगे कृष्ण, घर पर आएँगे, तो फिर उनकी आरती उतारी जाएगी। यशोदा माता कृष्ण-बलराम की आरती उतारेंगी। हम राधारानी के साथ।

मन हमारा इतना गंदा है..., इतना गंदा है..., इतना गंदा है, कि मल भी साफ़ होता है उसके सामने। मन इतना गंदा है! रोज़ गंदा हो जाता है, रोज़ गंदा हो जाता है, हमारे अपने विचारों से, already गंदा है, ऊपर से हमारे और विचार add हो गए उसके अन्दर और गंदा हो जाता है। मन को रोज़ स्नान करवाना है कथामृत् में, याद दिलाना है रोज़। क्यों? रोज़ भूल जाते हैं। कारण क्या है सारी बीमारी का? भगवद् विस्मृति। रोज़ भूल जाते हैं, रोज़ गंदा हो जाता है मन। रोज़ श्रवण करवाएँ, रोज़ करवाएँ, याद दिलाएँ, अरे! यह करना है। शरीर को स्नान करवाते हैं न गंदा हो जाता है, हाय-हाय। हाँ, यह हमें याद नहीं रहता, मन भी हाय-हाय हो चुका है, उसको भी स्नान करवाना है रोज़..., विचार है न खराब कर देते हैं न।

Actually हम अगर अष्टकालीन लीला स्मरण करना भी चाहें न अपनी बद्ध अवस्था में, तो भी बहुत ज़्यादा नहीं कर सकते, क्योंकि हृदय गंदा है। हृदय जिस मात्रा में साफ़ होगा, परिमार्जित होगा, उस मात्रा में ही यह प्रवेश करेगी भगवान् की नित्य लीला। ऐसे प्रवेश नहीं करेगी। प्रेमभक्तिचन्द्रिका में बताया है बाबाजी ने कि, "जिस मात्रा में साधु, गुरुजन की कृपा हृदय में जिस मात्रा में प्रवेश करेगी, उस मात्रा में प्रेम के आविर्भाव होने का scope है। जिस मात्रा में कृपा प्रवेश करेगी, जिस हद तक कोई प्रसन्न हुआ होगा वास्तविक संत।" तो यह कृपा..., यह कृपा-साध्य मार्ग है।

Honestly हाथ कौन खड़ा कर सकते हैं, कि हमको पता है कि हम किनकी कृपा पाना चाहते हैं? मुझे तो पता है। कोई doubt ही नहीं..., किसी चीज़ में कोई confusion ही नहीं। न थी, न है, न होगी। और एक बात भी clear है, जिस व्यक्ति की negative बोलने की आदत है, निन्दा करने की आदत है वह मेरे साथ नहीं रह सकता। इतने प्रकार के भक्त होते हैं, पर जो negative feelings के भक्त होते हैं या निन्दा वाले, वे साथ में आ ही..., आ ही नहीं पाते साथ में। जो सही भक्त होते हैं, केवल वही रह पाते हैं, नहीं तो इधर-उधर हो ही जाते हैं। और negative feelings हैं, तो option भी नहीं है साथ में रहना, वो possible भी नहीं होगा।

हाँ, किन्होने identify किया हुआ है कि वो..., बताने की ज़रूरत नहीं है, अपने आप को हृदय से, अपने आप को हम जवाब दें, कि हमने यह identify किया हुआ है जी, हाँ

यह। तो जिन्होंने..., अभी आप लोगों ने identify अगर नहीं किया, तो अभी लिखिए हृदय में जैसे। और identify करने का यह मतलब नहीं एक व्यक्ति हो गया..., तीन, चार, पाँच, सात कुछ भी हो सकता है वह number, पर primary कोई होना चाहिए। Primary, यह प्रमुख, उसके अलावा यह-यह-यह कुछ हो सकता है। जिनसे हम निरन्तर शिक्षा ले रहे हो, जो जैसे आपको हर प्रकार की अध्यात्मिक समस्याएँ, भौतिक समस्याएँ समाधान करने का प्रयत्न कर रहे हैं आपका, तो उन सबकी विशेष रूप से सेवा करेंगे, तो उन लोगों की कृपा प्राप्त होगी और विषेश रूप से होगी।

मैं ऐसे महात्माजन को भी जानता हूँ जिनको मंजरी भाव की सिद्धि हुई है। वे दिन में आठ-आठ घंटे cooking करते थे everyday! कई बारी इससे भी ज़्यादा। Cooking, cooking, cooking, cooking, cooking..., सिद्धि हुई है। आश्रम का पूरा सम्भाला हुआ है अपने ऊपर। हाँ, गुरु की प्रसन्नता है उसमें बाबा। गुरु की आज्ञा से, पूरे आश्रम का सारा भार अपने सिर पर लिया हुआ है। और गुरु भी उनको बोलते हैं, "अब बना लो २०० लोगों के लिए खीर बनालो।" एक बार आज्ञा नहीं दे रहे, हर दूसरे-चौथे दिन ऐसी आज्ञा होती जा रही है। इतने सारे लोग हैं, सबके लिए पूड़ी बना लो। सब्ज़ी-पूड़ी बना लो। अब खाना हो तो खाली पूड़ी नहीं होगी, सब्जी भी होगी। Bare minimum सब्ज़ी-पूड़ी और some मीठा। जो अगर साधु लोग, पंगत होगा इतना बड़ा। और वे भी पूर्ण हृदय से सेवा..., और सिद्धि होती है इससे। वास्तव में गुरु प्रसन्न हो जाएँ, तो उनका तो सब कुछ हो ही गया न।

तोमार सेवा कि चारुकला? हाँ, वह भी होगा उस समय decoration के समय। अपनी सेवा को याद रखें, वह तो कर रहे हैं, मुझे क्या करना है? मैं caring किस बात की हूँ मुझे पता है..., हाँ, लीला हो रही है, वह पता नहीं मेरी भी तो सेवा है उसमें। यह तो अच्छी बात है लीला हो रही है, बहुत अच्छी बात है, मेरा क्या होगा? मेरी क्या सेवा है इसमें? अपने नाम को चिन्तन करें, उसमें सेवा करें, कि हाँ, कि मैं इस प्रकार से राधारानी की शोभा वर्धन करुँगी, है न ! इस प्रकार से, be absorbed, किसी को कुछ पता नहीं चलता, कोई क्या कर रहा है। किसी को लग रहा होगा, यह देखो, यह तो प्रसाद ले रहे हैं, अरे तुम्हें क्या पता क्या-क्या चल रहा है साथ में। वह तो यह शरीर कर रहा है पता नहीं क्या-क्या, तुम्हें क्या पता अन्दर क्या-क्या चल रहा है। तो बाहरी तरीके से कुछ पता ही नहीं चलेगा। कुछ..., कुछ पता नहीं चलता।

आज के दिन अपने आपको absorb करना यह सिखाएँ। Absorb दोनों में से एक में। बिठा दें। यही सेवा रहेगी बाबाजी की। क्योंकि इसी से ही मंजरी भाव का, जो प्रणाली

मिल गई है वह, उसका वास्तविक हृदय में कब प्रकाश होगा? इसी से होगा, दोनों में से एक में absorbed रहने से। करना तो मंजरी भाव का अपना विकास है हमने।

ठीक है।

कोई भक्त इस सम्बन्ध में कोई प्रश्न करना चाहते हैं, तो कर सकते हैं।